शुंग वंश

→ 21st lecture by
Mamta Rani
History depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA
23-04-2020

Scanned with CamScanner

शुंगवंश
[187-75] BC

– 21th Lecture

→ इस वंश की स्थापना 185 ई०पू० में मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या करके की।

इस वंश की उत्पत्ति के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है। संभवत: शुंग उज्जैन प्रदेश के थे जहाँ इनके पूर्वज मौर्यों की सेवा में थे।

→ पुष्यमित्र शुंग कट्टर ब्राह्मणवादी था। उसने दो अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया। सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण पतंजलि उसके अश्वमेध यज्ञ के पुरोहित थे। इस काल में विदिशा का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक बढ़ गया था।

→ शुंग वंश के नवें शासक भागभद्र (भागवत) के शासनकाल के 14 वें वर्ष तक्षशिला के यवन शासक एण्टियालकीड्स का राजदूत हेलियोडोरस विदिशा में वासुदेव के सम्मान में गरुण स्तंभ स्थापित किया।

इस काल में संस्कृत भाषा का पुनरुत्थान हुआ। इसके उत्थान में महर्षि पतंजलि का विशेष योगदान था।

→ हेलियोडोरस का गरुण स्तंभ हिन्दू धर्म से संबंधित प्रथम प्रस्तर स्मारक है। इस काल में भागवत धर्म का उदय हुआ तथा वासुदेव विष्णु की उपासना प्रारंभ हुई।

Scanned with CamScanner

→ मौर्य काल में स्तूप कच्ची ईटो और मिट्टी की सहायता से बनते थे परंतु शुंगकाल में उनके निर्माण में पाषाण का प्रयोग किया गया है।

→ कनिंघम महोदय ने 1873 में भरहत स्तूप का पता लगाया। उसकी वेष्टनी और तोरणद्वार अधिकांश तः शुंगकालीन थे।

=*=